Incidence of Tax under Monopoly

एकाधिकारी वह दशा है जिसमें किसी वस्तु का केवल एक ही उत्पादक या विक्रेता होता है। उसके उत्पादन के क्षेत्र में दूसरे व्यापारी प्रवेश नहीं कर सकते हैं अर्थात् वस्तु की पूर्ति पर एकाधिकारी का पूर्ण नियंत्रण रहता है। एकाधिकारी उत्पादक का मुख्य उद्देश्य अधिकतम लाभ प्राप्त करने का होता है क्योंकि वह उस वस्तु का एकमात्र विक्रेता होता है इसलिए वह वस्तु के उत्पादन की मात्रा तथा वस्तु का मूल्य इसप्रकार से निर्धारित करता है कि उसके उद्देश्य की पूर्ति हो सके। एक एकाधिकारी अपने इस उद्देश्य में तभी सफल हो सकता है जबकि उसकी सीमान्त लागत सीमान्त आगम के बराबर हो जाती है। एक एकाधिकारी करारोपण से पहले ही उत्पादन की मात्रा और मूल्य का निर्धारण इसप्रकार कर लेता है कि उसे अधिकतम लाभ की प्राप्ती हो सके। अगर करारोपण के बाद वह पूर्ति में कमी कर के मूल्य में वृद्धि करता है तो उसका कुल लाभ गिर जायेगा और कर भार स्वयं सहन करने पर उसके एकाधिकारी लाभ में भी कमी आ जायेगी। लेकिन उसका कुल लाभ, कर राशि अदा करने पर भी अधिकतम ही रहेगा बशर्ते कि वह पुरानी निर्धारित मात्रा में ही उत्पादन करता रहे और इसी मूल्य पर अपनी वस्तु का विक्रय करे।

एकाधिकारी पर अनेक प्रकार से ~~करारोप~~ करारोपण किया जा सकता है। प्रधानतः एकाधिकारी पर दो प्रकार से कर लगाये जाते हैं –

(i) एक मुश्त कर या एकाधिकारी लाभ पर कर।

(ii) उत्पत्ति के मात्रा के आधार पर कर।

1. एक मुश्त कर या एकाधिकारी लाभ पर कर

यदि एकाधिकारी पर एकमुश्त कर लगा दिया जाए तो इससे उसकी सीमान्त लागत में वृद्धि नहीं होती है। यह कर उसकी स्थायी लागत का एक भाग बन जाता है। इस स्थिति में करो का विवर्तन नहीं होता है क्योंकि यदि वह ऐसा करता है तो वस्तु का मूल्य बढ़ जायेगा और इससे उसका एकाधिकारी लाभ भी कम हो जायेगा यद्यपि कर के सम्पूर्ण भार को सहने से भी उसके एकाधिकारी लाभ में कमी हो जाती है परन्तु यदि वह कर का विवर्तन उपभोक्ताओं पर कर देता है तो उसका लाभ पहले से भी और कम हो जाता है।

इसलिए यदि एकाधिकारी पर एक मुश्त कर लगाया जाता है तो उस कर का विवर्तन नहीं होता वह करो के भार को स्वयं ही सहन कर लेता है। इसे निम्न चित्र की सहायता से स्पष्ट कर सकते है –

चित्र अगले पृष्ठ पर

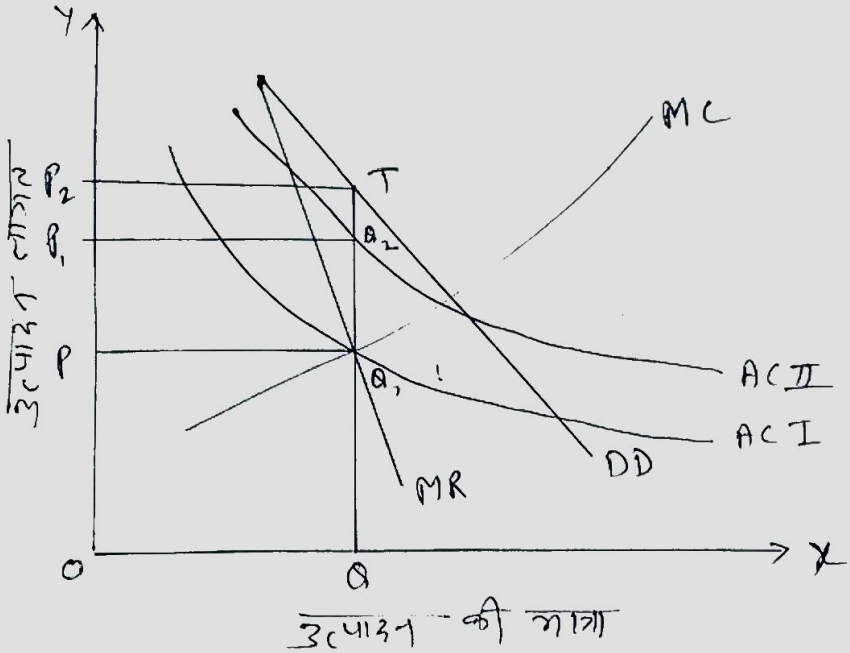

उपर्युक्त चित्र में MC रेखा MR रेखा को Q_1 बिन्दु पर काटती है जहाँ पर एक एकाधिकारी सन्तुलन की स्थिति में है। उसके द्वारा OQ मात्रा में उत्पादन किया जाता है तथा उसकी प्रति इकाई उत्पादन लागत QQ_1 तथा OP के बराबर है। इस दशा में एकाधिकारी की औसत लागत वक्र AC I है। इसप्रकार एकाधिकारी की कुल उत्पादन लागत $OQ \times OP = OQQ_1P$ के बराबर है। इस उत्पादन लागत पर एकाधिकारी अपनी वस्तु को बाजार में QT या OP_2 मूल्य पर बेचता है। और उससे प्राप्त होने वाला कुल मूल्य $OQ \times OP_2 = OQTP_2$ के बराबर है। इसप्रकार शुद्ध एकाधिकारी लाभ $OQTP_2 - OQQ_1P = PQ_1TP_2$ है। मान लो अब एकाधिकारी पर एक मुश्त कर PP_1 या Q_1Q_2 के बराबर लगा दिया जाता है। कर लगाने के बाद वस्तु का उत्पादन तथा मूल्य में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है। उत्पादन की मात्रा

OQ तथा वस्तु का मूल्य QP पूर्ववत ही रहता है। परन्तु कर के लगने से औसत वक्र रेखा AC I से AC II हो जाती है। अब वस्तु की प्रति इकाई उत्पादन लागत QQ_1 बदलकर QQ_2 हो जाती है। और कुल उत्पादन लागत OQQ_2P_1 के बराबर हो जाती है तथा कुल एकाधिकारी लाभ PQ_1TP_2 से घटकर $P_1Q_2TP_2$ के बराबर रह जाता है। अतः एकाधिकारी के कुल लाभ में $PQ_1Q_2P_1$ कर की राशि के बराबर कमी आ जाती है क्योंकि कर राशि का भुगतान वह स्वयं कर देता है।

उपरोक्त स्थिति तभी संभव है जब एकाधिकारी अपने एकाधिकार का पूर्ण उपयोग कर रहा हो। परन्तु व्यवहारिक जीवन में ऐसा संभव नहीं है। सरकारी नियन्त्रण, उपभोक्ताओं की शक्ति, प्रतियोगिता का भय अलोकप्रियता आदि के कारण पूर्ण एकाधिकारी दशा नहीं पाई जाती। इस अवस्था में जब कर लागू होता है तो एकाधिकारी मूल्य में वृद्धि कर देता है और वस्तु को 'एकाधिकारी मूल्य' पर बेचना प्रारम्भ कर देता है।

2. उत्पत्ति की मात्रा के अनुसार कर

यदि एकाधिकारी पर उसकी उत्पत्ति की मात्रा पर कर लगाने से प्रति इकाई उत्पादन लागत बढ़ जाती है। वस्तु की सीमान्त लागत में वृद्धि होने से एकाधिकारी को पुराने मूल्य पर उत्पत्ति की मात्रा बेचने पर लाभ नहीं होता अतः एकाधिकारी उत्पादन में कमी

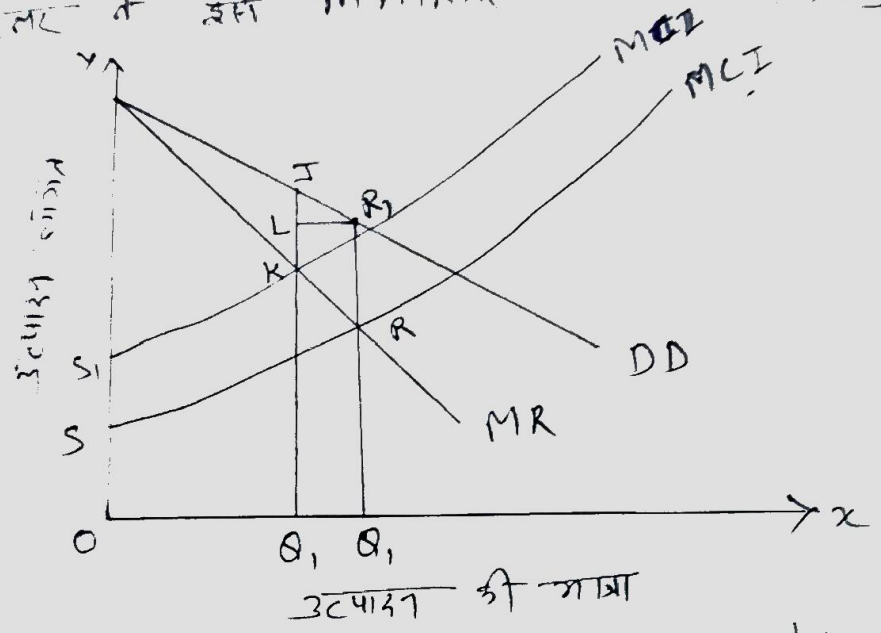

करके वस्तु को बढ़े हुए मूल्य पर बेचते हैं और इसप्रकार अपने लाभ को कम नहीं होने देता है। एकाधिकारी उत्पादन की मात्रा को कम करके वस्तु के मूल्य में इसप्रकार वृद्धि करता है कि सीमान्त आगम और नयी सीमान्त लागत पुनः बराबर हो जाए। हैलर ने इसे निम्नलिखित चित्र द्वारा प्रस्तुत किया है-

उपरोक्त चित्र में MCI रेखा कर लगाने से पूर्व की सीमान्त लागत वक्र है जो MR वक्र को R बिन्दु पर काटती है- ऐसी दशा में एकाधिकारी OQ मात्रा का उत्पादन करता है और अपनी वस्तु को QR1 मूल्य पर बाजार में बेचता है। इसप्रकार उसे प्रति इकाई RR1 के बराबर लाभ प्राप्त होता है। परन्तु अब एकाधिकारी द्वारा उत्पादित वस्तु पर प्रति वस्तु SS1 कर लगाया जाता है। कर लगाने से सीमान्त लागत बढ़ जाती है। इसप्रकार करारोपण के बाद MCI रेखा बदल कर MCII हो जाती है। MCII रेखा MR रेखा को अब K बिन्दु पर काटती है यह नया

सन्तुलन बिन्दु स्थापित हो जाता है ऐसी दशा में उत्पादन की मात्रा OQ से बढ़कर OQ1 हो जाती है। तथा मूल्य QR1 से बढ़कर QJ हो जाता है। इसप्रकार चित्र के अनुसार उपभोक्ता केवल LI के बराबर कर के भार को वहन करता है और शेष अधिकांश भाग उत्पादक अर्थात् एकाधिकारी द्वारा ही वहन किया जाता है।

इसप्रकार स्पष्ट है कि एकाधिकारी कितना भार उपभोक्ताओं पर डालेगा यह दो बातों पर निर्भर करता है। प्रथम वस्तु की मांग व पूर्ति की लोच तथा दूसरा उत्पत्ति के नियम।

Dr Sandhya Rai
Dept of Economics